



राजस्थान राज-पत्र

विशेषांक

साधिकार प्रकाशित

Regd. No. RJ. 2539.  
RAJASTHAN GAZETTE  
Extraordinary

Published by Authority

वैशाख 4, गुरुवार, शाके 1897-अप्रैल 24, 1975  
Vaisakha 4, Thursday, Saka 1897 - April 24, 1975

भाग 4 (क)

राजस्थान विधान मण्डल के अधिनियम।

विधि विभाग

अधिसूचना

जयपुर, अप्रैल 24, 1975

संख्या प. 2 (10) विधि। 73.--राजस्थान राज्य विधान मण्डल का निर्मांकित अधिनियम जिसे राष्ट्रपति की अनुमति दिनांक 24 अप्रैल, 1975 ई. को प्राप्त हुई, एतद्वारा सर्वसाधारण की सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है:--

राजस्थान पशु एवं पक्षी बलि (निषेध) अधिनियम, 1975

(अधिनियम संख्या 21 सन् 1975)

[राष्ट्रपति की अनुमति दिनांक 24 अप्रैल, 1975 को प्राप्त हुई]

राजस्थान राज्य में मन्दिरों के अन्दर अथवा मन्दिरों के परिसर में अथवा धार्मिक पूजा के सार्वजनिक स्थानों में पशुओं एवं पक्षियों की बलि निषेध किये जाने हेतु अधिनियम।

राजस्थान राज्य विधान मण्डल द्वारा भारत गणराज्य के छब्बीसवें वर्ष में यह निम्नलिखित रूप में अधिनियमित हो:--

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार तथा प्रारंभ.--(1) यह अधिनियम राजस्थान पशु एवं पक्षी बलि (निषेध) अधिनियम, 1975 कहलायेगा।

(2) इसका विस्तार समूचे राजस्थान राज्य पर होगा।

(3) यह ऐसी तारीख को प्रवृत्त होगा जो राज्य सरकार शासकीय राज-पत्र 4 अधिसूचना द्वारा नियत करे।

2. परिभाषाएँ.--इस अधिनियम में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो--

(क) 'मन्दिर के परिसर' से अभिप्राय मन्दिर से सम्बद्ध कोई मण्डप, धवन

तथा मन्दिर से सम्बद्ध भूमि जो साधारणतया मन्दिर में पूजा से सम्बद्ध किसी भी प्रयोजन के लिये काम में ली जाती हो, चाहे उक्त भूमि मन्दिर की संपत्ति है अथवा नहीं है, तथा मन्दिर से सम्बद्ध भूमि का सम्पूर्ण क्षेत्र जिस पर मेला जुड़ता हो अथवा यात्रा की जाती हो, सम्मिलित है;

- (ख) 'बलि' से अभिप्रेत है किसी देवी देवता को प्रसन्न करने के इरादे अथवा प्रयोजन से किसी पशु अथवा पक्षी को मारा जाना अथवा उसका अंगभंग किया जाना;
- (ग) 'मन्दिर' से अभिप्रेत किसी भी नाम से जानने योग्य ऐसे स्थान से है जो सार्वजनिक धार्मिक पूजा-स्थल के लिये काम में लिया जा रहा हो और सार्वजनिक धार्मिक पूजा-स्थल के रूप में समर्पित हो; तथा
- (घ) 'धार्मिक पूजा का सार्वजनिक स्थान' से जनता अथवा उसके किसी अनुभाग द्वारा धार्मिक पूजा या भक्ति के प्रयोजन के उपयोग हेतु आशयित या पहुँच का कोई स्थान अभिप्रेत है।

3. मन्दिर में अथवा मन्दिर के परिसर में अथवा धार्मिक पूजा के सार्वजनिक स्थान में पशु अथवा पक्षी की बलि निषेध.—किसी भी मन्दिर में अथवा उसके परिसर अथवा अन्य धार्मिक पूजा के सार्वजनिक स्थान में न तो कोई व्यक्ति किसी भी पशु अथवा पक्षी की बलि देगा अथवा न ही किसी को बलि देने में सहायता प्रदान करेगा।

4. बलि आदि क्रत्यों का निषेध.—कोई भी व्यक्ति किसी मन्दिर अथवा उसकी परिसर में अथवा किसी अन्य धार्मिक पूजा के सार्वजनिक स्थान के भीतर किसी बलिदान में,—

- (क) पुरोहिती या पुरोहिती की प्रस्थापना, या
- (ख) कोई काम या काम की प्रस्थापना, या
- (ग) सेवा, सहायता या सहभागिता अथवा सेवा, सहायता या सहभागिता की प्रस्थापना,

नहीं करेगा।

5. मन्दिर का अथवा मन्दिर के परिसर अथवा अन्य धार्मिक पूजा के सार्वजनिक स्थान का बलि के लिये निषेध.—कोई भी व्यक्ति जानबूझ कर किसी भी ऐसे स्थान पर बलि का कार्य नहीं निवाहने देगा जो—

- (क) किसी मन्दिर अथवा उसके परिसर अथवा अन्य धार्मिक पूजा के सार्वजनिक स्थान में अवस्थित है, और
- (ख) उसके अधिकार में अथवा उसके नियंत्रण में है।

6. दण्ड.—(1) जो कोई इस अधिनियम की धारा 3 के प्रावधानों का उल्लंघन करेगा अथवा उल्लंघन किये जाने के लिये सहायता अथवा दुष्प्रेरण करेगा, अपराधी ठहराये जाने पर 6 माह तक की जेल अथवा रुपये 500/- तक का जुर्माना अथवा दोनों से एक साथ दण्डित किया जा सकेगा।

(2) जो कोई अधिनियम की धारा 4 अथवा धारा 5 के प्रावधानों का उल्लंघन करेगा, अथवा उल्लंघन किये जाने में सहायता प्रदान करेगा, अथवा दुष्प्रेरण करेगा अपराधी ठहराये जाने पर 3 माह तक की जेल अथवा रुपये 300/- तक के जुर्माने अथवा दोनों से एक साथ दण्डित किया जा सकेगा।

7. अपराधों की सुनवाई.—इस अधिनियम के अन्तर्गत आने वाले अपराधों की सुनवाई प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा की जावेगी।

8. निषेधाज्ञा जारी किया जाना.—(1) यदि कार्य-पालक मजिस्ट्रेट का किसी परिवाद अथवा अन्य सूचना प्राप्त होने पर, यह समाधान हो जाता है कि इस अधिनियम के उपबन्धों का उल्लंघन किया जाकर बलि द्वारा अनुष्ठान किया जाने वाला है, तो वह, व्यवस्था करने वाले अथवा अनुष्ठान करने वाले एवं इससे सम्बद्ध व्यक्तियों के विरुद्ध इस प्रकार बलि के कृत्य किये जाने को निषिद्ध करने हेतु निषेधाज्ञा जारी कर सकेगा।

(2) जो कोई यह जानते हुए भी कि उप-धारा (1) के अन्तर्गत उसके विरुद्ध निषेधाज्ञा जारी की जा चुकी है, निषेधाज्ञा की अवज्ञा करेगा, अपराधी ठहराये जाने पर या तो एक वर्ष तक की जेल अथवा 1,000/- रुपये तक जुर्माने अथवा दोनों से दण्डित किया जा सकेगा।

9. निषेधात्मक आदेश लागू करने या कोई शिकायत दाखिल करने के लिये पुलिस थाने के भारसाधक के कर्तव्य.—(1) यह सूचना प्राप्त होने पर कि बलिदान का प्रबन्ध किया गया है या किया जाने वाला है, जब तक दी गई सूचना पर विश्वास नहीं करने के यथोचित आधार नहीं हों, जिन्हें लेखबद्ध किया जायेगा, पुलिस थाने का भारसाधक अधिकारी इस अधिनियम के उपबन्धों के उल्लंघन में जहाँ बलिदान किया जाने वाला हो वहाँ के कार्य-पालक मजिस्ट्रेट को धारा 8 के अधीन प्रतिषेधात्मक आदेश प्राप्त करने के लिये आवेदन करेगा।

(2) यह सूचना प्राप्त होने पर कि इस अधिनियम के अधीन कोई अपराध किया गया है, पुलिस थाने का भारसाधक अधिकारी, जब तक दी गई सूचना पर विश्वास नहीं करने के यथोचित आधार नहीं हों जिन्हें लेखबद्ध किया जायेगा, ऐसे अपराधों के विचारण की अधिकारिता रखने वाले न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष, यथा संभव शीघ्र, शिकायत दाखिल करेगा।

सम्पतराज सिंघी,  
शासन सचिव।

(ENGLISH TRANSLATION)

**THE RAJASTHAN ANIMALS AND BIRDS SACRIFICE  
(PROHIBITION) ACT, 1975.**

(Act No. 21 of 1975)

[Received the assent of the President on the 24th day of April, 1975]

An Act to prohibit sacrifice of animals and birds in, or within the premises of the temples or places of public religious worship in the State of Rajasthan.

Be it enacted by the Rajasthan State Legislature in the Twenty-sixth Year of the Republic of India, as follows:—

**1. Short title, extent and commencement.**—(1) This Act shall be called the Rajasthan Animals and Birds Sacrifice (Prohibition) Act, 1975.

(2) It shall extend to whole of the State of Rajasthan.

(3) It shall come into force on such date\* as the State Government, may, by notification in the Official Gazette, appoint.

**2. Definitions.**—In this Act, unless the context otherwise requires,—

(a) 'Temple Premises' means a mandap, building attached to the temple, and a land attached to the temple, which is generally used for the purpose of worship, in the temple, whether such land is a property of the temple or not, and includes whole of the area attached to the temple, where a fair is organised or a Yatra is performed;

(b) 'Sacrifice' means killing or mutilating an animal or a bird with the intention or for the purpose, of pleasing a deity or a god;

(c) 'Temple' means a place, known by whatever name; which is being used as a public place of religious worship and dedicated as a public place of religious worship, and

(d) 'Place of public religious worship' means any place intended for use by, or accessible to, the public or a section thereof; for the purposes of religious worship or adoration.

Extraordinary, part IV-C (II), dated 24-4-1975,

3. *Sacrifice of animals or birds in, or within the premises of, a temple; or in any place of public religious worship prohibited.*—No person shall sacrifice an animal or a bird, or assist in sacrificing it in a temple or within the premises thereof, or in any other place of public religious worship.

4. *Performing of a sacrifice etc. prohibited.*—No person shall,—

- (a) officiate or offer to officiate at, or
- (b) perform or offer to perform, or
- (c) serve, assist, or participate, or offer to serve, assist or participate in,—

any sacrifice in a temple or its premises or in any other place of public religious worship.

5. *Prohibition of use of a temple or temple premises or any other place of public religious worship for a sacrifice.*—No person shall, knowingly allow the performance of sacrifice at a place, which is:—

- (a) situated in a temple or, its premises or in any other place of public religious worship; and
- (b) in his possession or under his control.

6. *Punishment.*—(1) Whoever shall contravene or assist or abet in contravention of, the provisions of section 3 of this Act, may on conviction, be punishable with imprisonment which may extend up to 6 months or with fine up to Rs. 500/- or with both simultaneously.

(2) Whoever shall contravene or assist or abet in contravention of the provisions of section 4 or section 5 of this Act, may be punishable with imprisonment which may extend up to 3 months or with fine up to Rs. 300/- or with both simultaneously.

7. *Hearing of offences.*—The offence falling under this Act shall be heard by a Judicial Magistrate of the First Class.

8. *Issue of prohibitory Order.*—(1) If, on receipt of a complaint or any information, the Executive Magistrate is satisfied that a sacrifice is going to be performed in contravention of the provisions of this Act; he may issue an order prohibiting the persons arranging or performing such sacrifice or those connected therewith.

(2) Whoever, having known that a prohibitory order has been issued against him under sub-section (1), contravenes it, may on conviction, be punishable either with imprisonment which may extend up to 1 year or with fine up to Rs. 1,000/- or with both.



9. *Duties of an Incharge of a Police Station for making an application for a prohibitory order or for filing a complaint.*—(1) On receiving the information that a sacrifice has been arranged or has to be performed, the Officer-Incharge of a Police Station, shall, unless there are reasonable grounds which shall be recorded in writing for not believing the said information, make an application to the Executive Magistrate where the sacrifice is going to be performed in contravention of the provisions of this Act for obtaining a prohibitory order under section 8.

(2) On receiving the information that an offence under this Act has been committed, the Officer-Incharge of a Police Station shall, unless there are reasonable grounds which shall be recorded in writing for not believing the said information, file a complaint as early as possible before the Judicial Magistrate having jurisdiction to try such offences.